National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 190-191

मृणाल पाण्डे कृत उपन्यास 'हमको दिया परदेस' में व्यक्त नारी के प्रति पक्षपात

वंदना रानी
सहायक प्रोफेसर, हकीम हरबंस सिंह न्यू इरा कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन, संतनगर, सिरसा, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी की यशस्वी कथा शिल्पी मृणाल पाण्डे जी का जन्म 26 फरवरी 1946 को मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में हुआ। इनका पालन-पोषण मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इनकी माता जी शिवानी भी एक सुप्रसिद्ध कथाकार रह चुकी हैं। बचपन पहाड़ी क्षेत्रों में ही व्यतीत हुआ। उनकी माता जी ने एक ओर अपने कर्म, अपने स्वाभिमान, अपने संघर्ष से घर को शक्ति दी, गौरव दिया, दूसरी ओर अपने व्यक्तित्व के सांस्कृतिक आयामों द्वारा अपने साहित्य में नारी पक्ष को उठाया। उन्हीं के पालन-पोषण से ही मृणाल जी को सांस्कृतिक अनुष्ठानों के विविध विधानों का ज्ञान हुआ तथा लोककथाओं का ज्ञाता बनी। अतः घर में पूजा पाठ, शादी ब्याह, पर्व त्यौहार, हर जगह उन्हें नेतृत्व प्राप्त था। इनका व्यक्तित्व शारीरिक रूप से जितना सुन्दर था, उतना ही मानसिक रूप से भी। उनमें ऊर्जा थी, वह अभावों में भी तनी हुई थी, किसी की धौंस बर्दाश्त नहीं करती थी।

हमको दिया परदेस उपन्यास मृणाल पाण्डे द्वारा लिखा गया ऐसा उपन्यास है जिसमें उन्होनें बालकपन की स्मृतियों को संकलित किया। इसमें उन्होनें अपनी स्मृतियां छोटे-छोट कथा खण्ड़ों में शीर्षकों के माध्यम से वर्णित की। 'अथ मयूर कांड़' शीर्षक में एक छोटी बच्ची के माध्यम से लड़के लड़कियों में किए गए भेदभाव को दर्शाती है। दीनू और वह बच्ची जब अपनी नानी के घर आते हैं तो उनकी मामी के बेटे अनु और उनमें भेदभाव किया जाता है -''अलबता कभी कभार वे अपनी भतीजी के बेटे अनु को, आम की एक टॉफी देकर कृतार्थ करते। हमें वे कभी कुछ न देते। हम बेटी की बेटियां थी। बहुत हुआ तो हमें देखकर वे मुस्करा भर देते।''[1] उन्हें नानी के कस्बे में दो तरह के लोग दिखते साहब लोग, देसी लोग। साहब लोग धीर-गमीर, अंग्रेजी उच्चारण, तकल्लुफ भरी बातचीत का ढ़ोंग करते और थ्री पीस सूट पहनते। देसी लोग सादे पहनावे में मिलजुल कर रहते। नारी के घर आकर उनकी मां भी बदल जाती। वो सिर्फ पलंगों पर लेटी बतियाती रहती और बच्चे बाग में जी भर कर कच्चे फल खाते, अपनी कल्पनाओं को जीते। एक दिन उसकी बहन दीनू को जादूई मोल मिलता लेकिन बेटे बेटियों के भेदभाव के कारण न चाहते हुए भी उन्हें वह मोर अनु और शुभा को देना पड़ा। अन्त में मौसी की शादी के बाद वे अपने घर आ जाते हैं लेकिन आने से पहले वह दोनों बहनें उस मोल को छूना चाहती थी लेकिन मां उनके हाथ थाम लेती और चल पड़ती। अतः सम्पूर्ण प्रसंग में बेटे, बेटियों में होने वाले भेदभाव को दर्शाया हैं।

'उड़ने वाले सांप' शीर्षक प्रसंग में बताया कि लगातार तबादले होने से उन बच्चियों को भी नई जगह पाने की आदत पड़ गई थी। इस बार उनके पिता का तबादला अलमोड़ा में हुआ। जहां पर उनके घर के आस-पास बड़े देवदार के पेड़ और उनकी सांय-सांय चलती रही। एक बार उनकी मां के सिर से अचानक उड़ता हुआ सांप निकल जाता जिसकी पीठ पर बाल थे। उसको लेकर लगातार बातें होती रहती। एक रात बच्ची के रोने की आवाज को पंचू चिड़िया की आवाज कहा जाता तो अपशकुन कहलाती और उनका यह अपशकुन पड़ोस की मौसी की बस दुर्घटना वाली बात से सच्चा साबित होता हैं। नानी के घर जाते हैं तो मास्साब उन्हें पढ़ाते और अर्जिया लिखनी सिखाते। लेकिन जब भी समय मिलता वे बाहर घूमने निकल जाती और सफेद लेड़ियों में डंडी डालकर जांचती की भालू की है या बाघ की। तभी अचानक जब मौसी आकर माँ का सामान बांधती तो उन्हें पता लगता हैं कि वे नानी को यहां रहेगी कुछ दिन। रात को जब उनकी छोटी बहन होने पर उसे मिठाई खिलाई तो नींद में वह कुछ समझ न पाई। लेकिन मां के रोने की आहट सुनकर पता लगा कि तीसरी बेटी होने पर रो रही। नारी के शब्दों में, ''शकुन तो शुरू से ही साफ थे, उनी बेटी गुलाबी दिखती थी, उसे हर दम आचार खाना होता था और नींद आती रहती, ये सबके सब बेटी जन्मने के ही लक्षण हुए। मेरी मति मारी गई थी। मुझे पता क्यों नहीं चला?''[2] बाद में हीरा ही कहती कि उड़ने वाला सांप ही यह दुर्भाग्य लाया था।

'अब्दुल्ला' प्रसंग में सौतेली मां द्वारा किए गए अब्दुल्ला पर अत्याचार और टी.बी. रोग से पीड़त दीनू उसकी मामी का वर्णन हैं। अब्दुल्ला की मां की मां बचपन में मर गई और सौतेली माँ उसे प्रताड़ित करती हैं। वह छोटी बच्ची को बतात कि टी.बी. से उसकी मामी मर जाएगी तो उसके मामा जी दूसरी शादी कर लेंगे। दीनू की मां भी टी.बी. से मर जाती और पिता जी मां से शादी कर लेते हैं। बच्ची कहते हैं कि बड़े लोग हमेशा मरने की बातें करते रहते। उनकी मां भी अक्सर कहती कि उनके न रहने पर हम बहुत पछताया करेंगे। उसकी मां शायद उनके बाबू जी से खुश नहीं, अक्सर उनमें झगड़ा रहता। बच्ची के पूछने पर कि मां को टी.बी. हो जाएगा तो वह कहती - ''तुम इसकी फ्रिक न करो। मुझे टी. बी. नहीं हो सकती।''

''क्यों?''

''क्योंकि टी.बी. से वही लोग मरते हैं जिन्हें प्यार किया जाता है।''[3] अचानक उनका तबादला अल्मोड़ा होने से अब्दुल्ला नाराज हो जाता और उनसे कन्नी काट लेता हैं।

हमारी मोसियां प्रसंग में बताया हैं कि लड़कियों को बड़ा होने पर उन्हें घर में ही रखना चाहिए, चूल्हा चौका सिखाया जाए। विधवा हीरा दी अपनी बड़ी होती बेटी सीता को इसलिए ज्यादा

मारती ताकि उसे पीटते हुए दिक्कत न आए। नानी भी इस बात का समर्थन करती। नानी के घर मौसियां इसके विपरित हैं। यह फर्क अमीरी गरीबी के कारण हैं। अमीर होने के कारण मौसियां फिल्म देखने जाती है, फिल्म पोस्टरों ने देवानन्द-मधुबाला, राजकुमार, नरगिस को देखकर आहें भरती। 'पेटीकोट' की ब्यार' शीर्षक प्रसंग में जताया हैं कि किस प्रकार फिल्में देख-देखकर आज कल के लड़के बिगड़ते जा रहे। लड़कियों के पीछे खाना-पीना छोड़ देते। तारूदा जो मां के रिश्ते का भाई है, उसकी पत्नी मर चुकी, वह दूसरी शादी नहीं करता क्योंकि दूसरी पत्नी उसके बेटे से दुर्व्यवहार करेगी, लेकिन वह विधवा ब्राह्मणी से प्यार करता, लेकिन कहता कि शादी नहीं करेगा। तारूदा के घर में उसकी पत्नी का भूत उसे परेशान करता रहता। नानी जब कहती हैं कि वह मानसी के प्रेम में पड़ा है -

''इन मर्दआ को दूध पिलाओ, गुलामों की तरह एक टांग पर खड़े रहकर इनकी चाकरी बजाओ, खिला-पिलाकर छै-छै फुटका कर दो और फिर फर-फर-फर पेटीकोट की ब्यार जहां लगी और ये छू-मन्तर हुए।''[4]

'यात्रा' शीर्षक प्रसंग में टीनू, दीनू की मां पिता की मर्जी के खिलाफ नानी के घर छुट्टियां मनाने जाती। उनके साथ उनका छोटा भाई, छोटी बहन और एक नौकर भी जाता है लेकिन रास्ते भर उन्हें आर्थिक तंगी झेलनी पड़ती और जब नानी के घर पहुंचते तो वहां भी किसी को ज्यादा खुशी नहीं होती उनके आने की क्योंकि उनके मामा बीमार है और उनकी बीमारी पर ज्यादा खर्चा हो चुका था। अनु, शुभा भी उनके आने से खुश नहीं। अन्त में उनकी मां, बाबू जी से मनीऑर्डर द्वारा वापिस आने का खर्चा मंगवा लेती हैं। ''मां के यह कहने के बाद कि वह जल्दी घर लौटना चाहती है, क्योंकि पीछे से घर की देखभाल नहीं हो पा रही होगी, मौसियां हमारे आने के बाद से पहली बार सचमुच भल मन साहिब से हमें देखकर मुस्कराती है।''[5] नानी के घर रहते हुए दीनू को उसकी मां भटकाती है कि उनकी मां सौतेली है जिससे उसके मन में फर्क आ जाता है, टीनू के शब्दों ''तब मैं जान जाती हूं कि अब से, सौतेली बहनें होने का दुःख और शर्म हमारे बीच आते-जाते रहेंगे और कोई भी चीख इसे पूरी तरह नहीं रोक पाएगी। शायद मामी ही ठीक थी और कुछ दीनू का ही होना चाहिए/शायद।''[6] वापिस आने पर बाबू जी की व्यंग्यात्मक बातों से उन्हें अपने जाने का अफसोस ज्यादा होता हैं। यही सब कुछ 'यात्रा' प्रसंग में बताया है।

इस प्रकार 'हमको दियो परदेस' उपन्यास एक छोटी बच्ची टीनू के बालपन स्मृतियों पर आधारित उपन्यास है। अपने आस-पास के परिवेश के यथार्थ रूप को उजागर करना, नए मूल्यों की स्थापना करना तथा एक नया आदर्श साहित्य में प्रस्तुत करना साहित्यकार का कर्म हैं। वह समाज में रहते हुए जो अनुभव करता, सोचता समझता है, उसे वह अपनी रचना में अभिव्यक्त करता हैं। संवेदनशील साहित्यकार अपने आस-पास की घटनाओं को नकार कर उनसे निर्विकार रचना नहीं कर सकता। मृणाल पाण्डे जी भी एक ऐसी ही साहित्य की लेखिका रही है जिनके लिए उनकी रचना ही सच कहने का एक जरिया है। इनकी रचनाओ में अपने इर्द-गिर्द की जिन्दगी और उनकी मूल समस्याएं ही अभिव्यक्त होती है। उनकी रचनाओं में समाज में स्त्री-पुरूष के लिए निर्धारित पृथक-पृथक मूल्यों, मानों, मर्यादाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई हैं। उनकी लोककथा शिल्प में ढ़ली बड़ी सशक्त कहानी 'एक ही हंसमुख दे' में परियों-चिड़ियों की बातों के माध्यम से इस यथार्थ सत्य को व्यक्त किया कि पुरूष प्रधान समाज में सारी व्यवस्था, सारी रीति नीतियां नारी को 'चाकर' रखने के लिए, म्हाने चाकर राखो जी' के स्वर में, ही की थी। पुरूष पर कोई बंधन नहीं, सब बंधन केवल स्त्री के लिए ही, ''कोई उसूल कानून नहीं होता है, स्वामी दासी के खेल में.... वे सब एक सुर में बोली। हंसमुख दे सोच में पड़ गई। वह सब तो पुरानी जानकार थी ना।''[7] हंसमुख को मां की बात याद आ जाती है, ''गुरू पर उसूल कानून नहीं होते, गुरू पर नहीं, स्वामी पर नहीं, पिता पर नहीं, तब उसूल कानून किसके लिए? औरतों के लिए स्वामी की अगाड़ी, घोड़े की पिछाड़ी से बचना ही अकलमंदी।''[8] कहानी में ऐसे वाक्य खण्ड और फिर राक्षस द्वारा हथोड़े से सोने की कील ठोकना, उसका कोयल होकर पिंजरे में कैद होकर सिर धुनना-समस्त नारी की यथार्थ लोक कथा के माध्यम से साक्षात् हो जाती है। इस प्रकार मृणाल पाण्डे जी ने पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के दुहरे मानों को चुनौती देकर तत्कालीन यथार्थ स्थिति से पाठकों को अवगत कराया हैं।

संदर्भ

1. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ.22
2. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ.50
3. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ.62
4. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ.96&97
5. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ०115
6. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ०116
7. मृणाल पाण्डे, एक थी हंसमुख दे, सारिका, कथा पीढ़ी विशेषांक - चार दिसम्बर 1985
8. मृणाल पाण्डे, हमको दिया परदेस, पृ०97